

बिना एवंतंत्र मीडिया के एवंतथ लोकतंत्र को सुनिश्चित कर पाना संभव नहीं

निष्पक्षता दर्शाने के भी प्रयास सिख अलगाववादी नेता हरदीप सिंह निजर की हत्या के आरोप में कनाडा पुलिस ने तीन भारतीय नागरिकों को गिरफ्तार करने का दावा किया है। रॉयल कनाडियन माउटेड पुलिस ने कहा है कि वे निजर की हत्या में भारत सरकार की सलिलता की जांच कर रहे हैं। 45 वर्षीय निजर की पिछले वर्ष कनाडा में नकाबपोश बंदूकधारियों द्वारा युद्धांश्रेष्ठ के बाहर गोली मार कर हत्या कर दी गई थी जिससे भारत और कनाडा के दरम्यान राजनीयिक विवाद पैदा हो गया। पुलिस का कहना है कि जांच अभी जारी है तथा उनके पास प्रमाण हैं, और इस मामले में भारत सरकार के तार ज़ड़े होने की बाबत इन्हें ख़ालिता जा रहा है। वैसे कनाडा के प्रधानमंत्री जॉर्स्टन द्वारा पहले ही भारत के खिलाफ पर्याप्त सबूत होने की बाबत कर चुके हैं। हालांकि भारतीय अधिकारियों ने इन आरोपों का विवर से ख़ंडन किया था। साथ ही, कनाडा पर खालिस्तानी आतंकियों और चरमपंथियों को पनाह देने की भी बाबत कनाडा के समझ उठाई थी और तलब है कि निजर भारत सरकार द्वारा पहले ही आतंकवादी घोषित किया जा चुका था जो ऐसे चरमपंथी अलगाव समूह का नेतृत्व कर रहा था, जो अलग खालिस्तान की मांग करता है। इस जांच में भारतीय अधिकारियों को शामिल कर कनाडाई सरकार ने अपनी निष्पक्षता दर्शाने के भी प्रयास किए हैं। कनाडा ही नहीं, बल्कि अमेरिका और इंडिलैंड जैसे देशों में रहने वाले सिखों में भी खालिस्तान के सुखर समर्थक हैं। भारत सरकार सिख अलगाववादी अंदेलन की इस चिंगारी के भड़कने को भारत के घेरे लू समालों में हस्तक्षेप बताती रही है। इससे पहले भी ब्रिटेन में अवतार सिंह खांडा की रहस्यमय मौत और लाहौर में परमजीत सिंह पंजावाड़ की गोली मार कर की गई है। यहाँ पर भारत सरकार पर सदैह किया गया था। कोई भी सरकार अपनी अखंडता, सुरक्षा और आंतरिक मामलों में बाहर का हस्तक्षेप बर्दाशत नहीं कर सकती। बहरहाल, जांच जारी है, इसलिए अभी अंतिम निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी। खासकर इसके बावजूद जब देश में लोक सभा के चुनाव चालू हैं, इस तरह के विवादों से समुदाय विशेष को प्रभावित करने की आशंका भी निराधार नहीं कही जा सकती। हालांकि मोदी सरकार वैश्वक पटल पर देश की छवि को लेकर न केवल सावधान रहती है, बल्कि कड़े संदेश देने में भी कदम पिछे नहीं ख़ींचती। चरमपंथियों/आतंकवादियों को लेकर किसी भी तरह की मुलायमियत देश की सुरक्षा के लिए उचित नहीं ठहराई जा सकती।



प्रयोग सारणी लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

0

स्वतंत्रता एक अनमाल विशेषाधिकार है जिसे कोई भी देश त्याग नहीं सकता। आज के वैशिक सदर्थ में छढ़ता से प्रतिष्ठनित होता है। भारत में, एक जीवंत और स्वतंत्र प्रेस न केवल सविधान में निहित एक मौलिक अधिकार है, बल्कि लोकतंत्र की आधारशिला भी है, जो एक प्रहरी, सूचना का प्रसारक और विविध आवाजों के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। हालाँकि, भारत में प्रेस की स्वतंत्रता की वर्तमान स्थिति विभिन्न चुनौतियों के कारण जांच के अधीन है। भारत में प्रेस स्वतंत्रता की वर्तमान स्थिति पर नजर डाले तो भारत में एक विविध मीडिया परिवर्ष है जिसमें प्रिट, प्रसारण और डिजिटल प्लेटफॉर्म शामिल हैं। हालाँकि यहाँ काफी हद तक स्वतंत्रता है, फिर भी प्रेस की स्वतंत्रता और अखंडता के संबंध में चिंताएँ उठाई गई हैं। सेंसरशिप, स्व-सेंसरशिप, राजनीतिक हस्तक्षेप ने प्रेस की स्वतंत्रता के क्षण के बारे में चिंता बढ़ा दी है।

राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते राजनेताओं और मीडिया घरानों के बीच सांठगांठ के परिणामस्वरूप अक्सर पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग होती है और अस्वरूपता की आवाजों का दमन होता है। धमकीयों और हमलों: प्रतकारों को शारीरिक हिंसा, उत्पीड़न और धमकी का सामना करना पड़ता है, खासकर जब वे भ्रष्टाचार, मानवाधिकार उल्लंघन या सांप्रदायिक तनाव जैसे संवेदनशील मुद्दों को कवर करते हैं। कभी-कभी प्रतकारों को चुप कराने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रतिबद्धित करने के लिए राजद्रोह, मानहानि और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम जैसे कानूनों का दुरुपयोग किया जाता है। मीडिया संगठन, विशेष रूप से छोटे संगठन, वित्तीय बाधाओं का सामना करते हैं, जिसके कारण पत्रकारिता मानकों से समझौता होता है और

निर्भरता होती है। इंटरनेट ने मानव की पहुंच का विस्तार किया है गलत सूचना और फैली खबर प्रसार को भी बढ़ावा दिया है, फिर पारंपरिक मीडिया आउटलेटों विश्वसनीयता कम हो गई है बहुत शर्मनाक बात है कि हमारी लोकतात्रिक देश में प्रेस की अवस्था की स्थिति पर कोई खतरा मंड़ा नहीं। इस स्थिति के लिए किसी एक या एक संस्था को जिम्मेवार बहुत गलत होगा। लेकिन, साथ ही यह भी सत्य है कि यहां आत्मवित्तन का समय है और आत्मवित्तन सरकारों को करना न नीताओं को करनी है, पत्रकार दलों को करनी है, रिपोर्टरों को है और खास तौर पर पत्रकारों संस्थानों के मालिकों को करना। कि हम किस तरह की पत्रकारी चाहते हैं। आज यह आत्मवित्तन विषय है कि हम क्यों पत्रकारों का या आनेवाली पीढ़ियों में को

प्राणी दिया
इसने उत्तरों के
जिससे स की
। यह
रे जैसे
जादी
राये।
व्यक्ति
मानना
इसके
हमारे
। यह
नी है,
धन्धुओं
करनी
गिरिता
नी है,
गिरिता
न का
र बने
ई क्यों
अपने
किसी
समझा
बिल्कुल
इतना
खास
आज
चलाया
ज्यादा
खबरों
संस्था
ज्यादा
है, जो
में फंस
दरअस
दौर में
और र
तक त
आखिय
उस प
एक व
है। व
पत्रक

है, क्योंकि इसे चलाने में कम खर्च होने के चलते इस पर दबाव कम रहता है। प्रेस की स्वतंत्रता को कायम रखने के संभावित उपाय देखें तो कानूनी सुधार से उन कानूनों को संशोधित या निरस्त करें जिनका उपयोग प्रेस की स्वतंत्रता को कम करने के लिए किया जाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे अधिकृति की स्वतंत्रता की संवैधानिक गारंटी के साथ संरेखित हों। पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए धमकियां या हमलों का सामना करने वाले पत्रकारों को पर्याप्त सुरक्षा और कानूनी सहायता प्रदान करना तथा अपराधियों को जवाबदेह ठहराना होगा। मीडिया साक्षरता के माध्यम से प्रचार और गलत सूचना से विश्वसनीय जानकारी को पहचानने के लिए जनता को शिक्षित करने के लिए मीडिया साक्षरता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना होगा। नैतिक पत्रकारिता हेतु मीडिया संस्थानों को पेशेवर नैतिकता और मानकों का पालन तथा इमानदारी और जवाबदीही की संस्कृति को बढ़ावा देना और स्वतंत्र मीडिया के लिए बाहरी प्रभावों पर निर्भरता कम करने के लिए स्वतंत्र मीडिया संगठनों को वित्तीय सहायता और नियामक समर्थन प्रदान करना कारगर उपाय होगा। महात्मा गांधी द्वारा मान्यता प्राप्त स्वस्थ लोकतंत्र के कामकाज के लिए स्वतंत्र प्रेस का अधिकार आवश्यक है। जबकि भारत में एक जीवंत मीडिया परिदृश्य है, प्रेस की स्वतंत्रता के लिए चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार, मीडिया संगठनों, नागरिक समाज और जनता के ठोसक प्रयासों की आवश्यकता है। और यह की स्वतंत्रता को कायम रखकर, भारत अपने लोकतांत्रिक ताने-जाने को मजबूत कर सकता है और यहाँ सुनिश्चित कर सकता है कि उसके नागरिकों की आवाज बिना किसी डर या पक्षपात के सुनी जाए।

નારીઓ દ્વારા નાહલાડા કરી નારીઓ વિકાસ કી નહિત્ય



श्रात पाठ्क

अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय

1

एक महिला चालक दल सदस्यों को भारत की कूटनीति के कारण तत्काल नियम कर दिया गया था और अब ये जाता रहा है। दोगों, विस्फोटों और खूनी झड़पों के तांडव से देश कराहता रहा है। गांधी नियोगी गतिविधियों का मैलाल पर पुनः आसीन होने के लिए भागीरथी प्रयास तेज किये गये। परिणामस्वरूप यह कर्त्ता और रुम्ह दौनों द्वीप भागत पर में किलकारी भरती दलगत राजनीति के अनेक लाडले अब राष्ट्रभक्ति की भावना को तिलांजलि देकर स्वार्पण कर रहा है।

निरंतर बढ़ती जा

तसुदूरोप का नया नारों पर नाजुकी नीतियां शीर्षणगमी हो रही हैं। ईरान के व्यापारियों 17 अप्रैल को जपत किये पुरताली झाँडे वाले जहाज एमएससी एरीज के चालक दल के 17 सदस्यों को मिरफत्तार कर लिया गया था। इस कन्टेनर जहाज का इजरायल के साथ संबंध होने के कारण ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स नेवी ने होर्मुज जलडमर्स मध्य के निकट घेर कर कब्जे में ले लिया था। चालक दल में 6 भारतीय थे जिसमें हाल ही में बढ़कर आज तक 11000 शीर्षणगम्बुज हो रहा है। अधिनन्दन की पाकिस्तान से वापिसी से लेकर यूक्रेन से भारतीय छात्रों को जंग के मध्य रास्ते देने की घटनायें समय-समय पर सामने आती रही हैं जबकि अतीत में विमान अपहरण के बहाने आतंकियों को हूडाने जैसी ब्लैक मेलिंग देखने को मिलती रही है। अमेरिका के आगे काले गेहूं के लिए हाथ फैलाये जाते रहे हैं। पाकिस्तान के आतंकी प्रहारों का रोना विश्व समादाय के सामने रोया हुआ है। नारों पर तस्वीर यादों की कोशिश की गई है कोहान्ह छद्मवेशाधारियों ने बहुरूपिये मुखोंट पहनकर व्यवस्था को धूल धूसित किया। समय के साथ बदलाव की आंधी आई और नकारात्मकता को रौदैने का हैसला लेकर विकास ने कदमताल करना शुरू कर दिया। अमेरिका और रूस के साथ संतुलन स्थापित किया। इजरायल और ईरान के साथ सामंजस्य बनाये रखा। अनेक मुस्लिम राष्ट्रों का विश्वास जीता। विश्वगूरु के सिहासन पर बासायक परमार्थों से उपर्युक्त है। द्वारा मारी परिषिका के पीछे तात्परताओं को दैड़ाने की होड़ लगी है। लुभावने वादों, मुफ्तखोरी की घोषणाओं और संपन्नता के सपनों से वर्ग-संघर्ष की चालें चलीं जा रही हैं। लालू का मुस्लिम आरक्षण, ममता की सीएए न लागू होने देने की घोषणा, राहुल की जातिवाद जनरणना, अखिलेश की वर्ग विशेष को सुविधायें, मायावती का खास लोगों के उत्थान का वायदा, केजरीवाल की लिंग भेदी सुविधा, मणिशंकर का पाकिस्तानी वायदा विकास का नया राखिया बन रहा जाएगा है। द्वारा मारी परिषिका के पीछे तात्परताओं को किस्तों में परिणित करने वाली पार्टी का असली चेहरा पिछले कुछ सालों में नागरिकों दिखने लगा है। पैत्रिक विद्युत के दिग्गजों ने देश के अन्दर और बाहर एक साथ मातृभूमि को अपमानित करने का ही काम किया है। कभी लंदन में देश को कोसा तो कभी अमेरिका में मनगढ़न्त कहानियां सुनाकर आंसू बहाये।

